नोट्स

B.A. Part – IIIrd (Hons)

Sub – Geography

Paper – VI (Human Geography)

Group – 'B'

Unit – IV

Q. भारतीय ग्रामीण बस्तियों के प्रकारों (प्रतिरूपों) का वर्णन करें

किसी भी गाँव का प्रतिरूप उस गाँव का आकृति तथा मकानों एवं मार्गों की स्थिति और व्यवस्था के आधार पर निश्चित किया जाता है। सामान्यतः भारतीय गाँव के निम्नांकित स्वरूप देखने को मिलते हैं। →

(1) **रेखीय प्रतिरूप** :→ इस प्रकार के गाँव किसी सड़क के दोनों ओर, नदियों के ऊंचे भागों या नहरों के किनारे पंक्ति के रूप में पाये जाते हैं। इस प्रकार के गाँव एक या अनेक पंक्तियों में बने होते हैं। इस प्रकार के बस्तियाँ पूर्वी तटीय मैदान, केरल के तटीय क्षेत्र, निम्न गंगा के मैदान, संथाल प्रदेश, तमिलनाडु के तंजावुर, मध्य प्रदेश, छत्तीसगढ़ में देखने को मिलती हैं।

(2) **चौकी पट्टी प्रतिरूप** :— इस प्रकार के गाँव दो सड़कों के मिलन अथवा चौराहे पर बसने से शुरू होता है। इसकी गलियाँ तथा सड़कें एक दूसरे के समानान्तर होती हैं। गंगा यमुना के ऊपरी भाग में ऐसे गाँव अधिक हैं। मेरठ में– शेरपुर, दोगा, रेवड़ी आदि ऐसे गाँव हैं। उ० आन्ध्र प्रदेश, कर्नाटक तमिलनाडु आदि में ऐसे गाँव मिलते हैं।

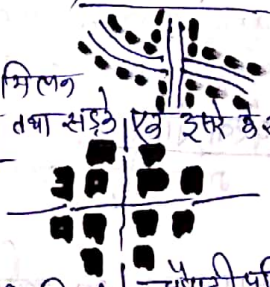

चौपट्टी प्रतिरूप

(3) — **अरीय या त्रिज्याकार प्रतिरूप** :→ जब किसी केन्द्रीय स्थिति वाले गाँव में अनेक सड़कें आकर मिलती हैं, वहाँ कृषि वस्तुओं के आदान प्रदान की सुविधाएँ मिल जाती हैं। वहाँ मार्गों के सहारे-सहारे मकानों का निर्माण होता है। भारत में ऐसे प्रतिरूप बहुतायत मिलते हैं। मेरठ के निकटवर्ती क्षेत्र में पटला, निवारी, सिवाल आदि ऐसे ही हैं। राजस्थान, हरियाणा, मध्य प्रदेश, छत्तीसगढ़, बिहार तथा झारखण्ड में भी ऐसे प्रतिरूपों के गाँव मिलते हैं

(4) — **तारा प्रतिरूप** :→ इस प्रकार के गाँव आरम्भ में त्रिज्या के आधार पर होते हैं, किन्तु बाद में केन्द्र से बाहर की ओर जाने वाली सड़कों के किनारे फैलते जाते हैं। धीरे धीरे इसका आकार तारे की भाँति हो जाती है। ऊपरी गंगा मैदान तथा तमिलनाडु में ऐसे गाँव मिलते हैं।

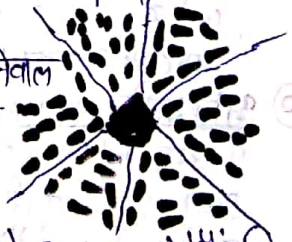

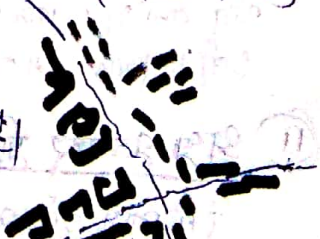

(5) **वृत्ताकार प्रतिरूप** :→ इस प्रकार के गाँव के केन्द्र में मुखिया या तलाब, चबूतरा या पंचायती घर आदि होता है। इस प्रकार के गाँव गंगा यमुना-दोआब, पंजाब, बिहार, झारखण्ड, मध्य प्रदेश, छत्तीसगढ़, महाराष्ट्र, गुजरात, आन्ध्र प्रदेश, हरियाणा एवं पूर्वी राजस्थान में मिलता है।

Scanned with CamScanner

⑥ **तीर प्रतिरूप** :→ ऐसे गाँव अन्तरीपों ~~के मिलते~~ हैं के सिरे पर मिलते हैं जो तीन ओर से जल से घिरे होते हैं अन्तरीप का अगला भाग अधिक संकरा तथा लम्बा एवं पिछला भाग अधिक चौड़ा एवं विस्तृत होता है। इस प्रकार के गाँव नदियों के नुकीले मोड़ पर भी बसे होते हैं। इस प्रकार के गाँव, उड़ीसा में- चिल्का झील या साना जैसी गाँव आदि। बिहार में बूढ़ी गंडक के मोड़ पर मंझोल, सिवारी आदि।

⑦ **सीढ़ीदार प्रतिरूप** :→ इस प्रकार के गाँव मुख्यत: पर्वतीय ढालों पर, ~~नदियों के घाटियों में~~ पर्वतीय श्रेणियों पर तथा ढाल के मध्य भाग में मिलते हैं। जब मकान सीढ़ियाँ काट कर बनाये जाते हैं। भारत में ऐसे गाँव सामान्यत: गढ़वाल, कुमायूं, कुल्लू, कांगड़ा ~~व~~ नागालैंड, मणिपुर, छोटानागपुर के पठार मध्यप्रदेश उ० पू० अरावली पर्वत आदि पर पाये जाते हैं।

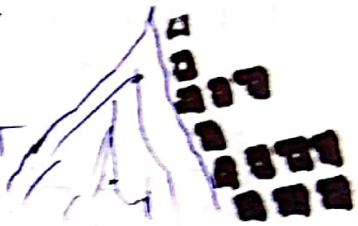

⑧ **पंखा प्रतिरूप** :→ ऐसे गाँव प्राय: नदियों के डेल्टाओं में जैसे— गोदावरी, कृष्णा, कावेरी महानदी, डेल्टा प्रदेशों में पाये जाते हैं।

⑨ **आयताकार या वर्गाकार गाँव** :→ इस प्रकार के गाँव सामान्यत: मरुस्थलिय क्षेत्रों में जहाँ धूलभरी आंधियाँ चलती हैं अथवा मैदानी भागों में जहाँ डाकू एवं लुटेरों का भय रहता है पाये जाते हैं। इस प्रकार के गाँव पश्चिमी राजस्थान, कर्नाटक मध्यपूर्वी भागों में तथा आन्ध्र प्रदेश के रायलसीमा क्षेत्र में मिलते हैं।

⑩ **अनियमित या अनाकार गाँव** :→ ऐसे गाँव का आकार नियोजित न होकर अनियमित होता है आरम्भ में जहाँ कहीं भी भू-स्वामी या जमींदार अपना मकान बना लेता है, बाद में वहीं से इधर-उधर बनायी गयी संकरी-चौड़ी गलियों के सहारे बढ़ या घेरे बनाकर अपना घर बनाये जाने लगते हैं। जिन क्षेत्रों में धरातल अधिक ऊँचा-नीचा होता है अथवा झीलों दलदलों और वनों की अधिकता पायी जाती है वह इस प्रकार के गाँव मिलते हैं। जैसे- गंगा के डेल्टाई प्रदेश, पूर्वी राजस्थान, मालवा पठार, महाराष्ट्र के पहाड़ी भागों में मिलते हैं।

⑪ **अर्द्ध वृत्ताकार प्रतिरूप** :→ इस प्रकार के गाँव प्राय: अर्द्धवृत्ताकार रूप में होते हैं ऐसे गाँव भारत में नदियों के मोड़ों के तटों पर विशेषत: – गंगा-यमुना, घाघरा, गोमती, कोसी, सोन आदि नदियों के किनारे पाये जाते हैं।